राष्ट्रीय प्रतीक

चक्रध्वज

Chakradhvaja

NATIONAL SYMBOLS

Digitized by the Internet Archive
in 2018 with funding from
Public.Resource.Org

https://archive.org/details/chakradhvajanati00unse

राष्ट्र ध्वज

चक्रध्वज

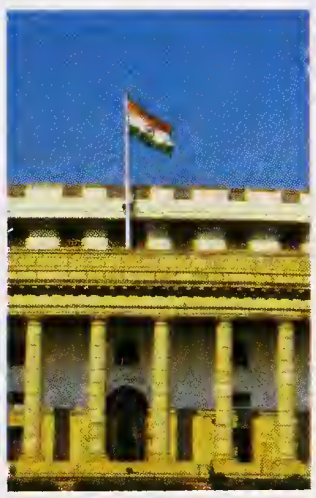

Chakradhvaja

NATIONAL FLAG

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की है। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

राष्ट्र ध्वज

राष्ट्र ध्वज के उद्‌भव तथा अधिग्रहण की कथा निस्संदेह आकर्षक है। व्यक्तिगत विचारों तथा जातिगत व राजनैतिक विचारधाराओं ने राष्ट्र ध्वज के वर्तमान स्वरूप की संकल्पना तथा परिकल्पना को स्पष्टतः प्रभावित किया है।

यह प्रमाणित नहीं है, पर सामान्यतः ऐसा विश्वास है कि राष्ट्र ध्वज के प्रथम डिजाइन में तीन समस्तर पट्टियां थीं। मध्य की पीले रंग की पट्‌टी पर देवनागरी लिपि में नीले रंग से वन्दे मातरम् लिखा था। सबसे ऊपरी पट्‌टी हरे रंग की थी, जिस पर कमल के आठ पुष्प अंकित थे और नीचे की लाल पट्‌टी पर बायीं ओर श्वेत सूर्य तथा दायीं ओर एक श्वेत अर्धचन्द्र और तारा अंकित था। कुछ विद्वानों का दावा है कि कोलकाता के पारसी बागान चौक पर 7 अगस्त, 1906 ई को ध्वज पर कोई तारा अंकित नहीं था।

राष्ट्र ध्वज का प्रथम डिजाइन, 1906 ई.

मैडम कामा ध्वज, स्टुटगार्ट जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया, 1907 ई.

ध्वज के विकास की कहानी में हम एक अन्य ध्वज का संदर्भ पाते हैं, जिसे मैडम भीकाजी कामा और उनके निर्वासित क्रान्तिकारी दल द्वारा स्टुटगार्ट, जर्म़नी में सन् 1907 में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया। कुछेक परिवर्तनों को छोड़ कर, यह झण्डा पहले झण्डे से मिलता – जुलता था।

NATIONAL FLAG

The story of the origin and adoption of the National Flag is indeed a fascinating one. Personal, racial, and political ideologies have influenced the concept and design of the flag as we see it today.

It is not confirmed, but commonly believed that the first National Flag had three horizontal stripes. The middle yellow colour had *Vande Mataram* in blue written across it in the Devanagari script. Eight lotus flowers were embossed on the top stripe which was of green colour and on the bottom red stripe there was a white sun on the left, and a white crescent and star on the right. Some scholars assert there was no star on the crescent on the flag that was hoisted on August 7, 1906 in the Parsee Bagan Square in Kolkata

In the story of the evolution of the flag, we come across another flag which was unfurled at the International Socialist Congress at Stuttgart, Germany in 1907 by Madame Cama and her band of exiled revolutionaries. This was similar to the first flag except for a few changes. The design of the eight lotus flowers was different, the sun on the bottom red stripe was shifted to the right of the flag and the crescent to the left. There was no star on the crescent. This flag was smuggled into India by Indulal Yagnik, the socialist leader of Gujarat.

In 1917, by the time the third flag was hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak during the Home Rule Movement, our freedom struggle had already taken on a significant momentum. Five red and four green horizontal stripes arranged alternately on the flag on which seven stars in the *saptrishi* configuration were superimposed. On the top left hand corner was the Union Jack and the top right hand corner, a white crescent and star. The inclusion of the Union Jack symbolized the goal of Dominion Status, and hence was not accepted by a large number of people.

Flag of the Home Rule Movement, 1917 hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak

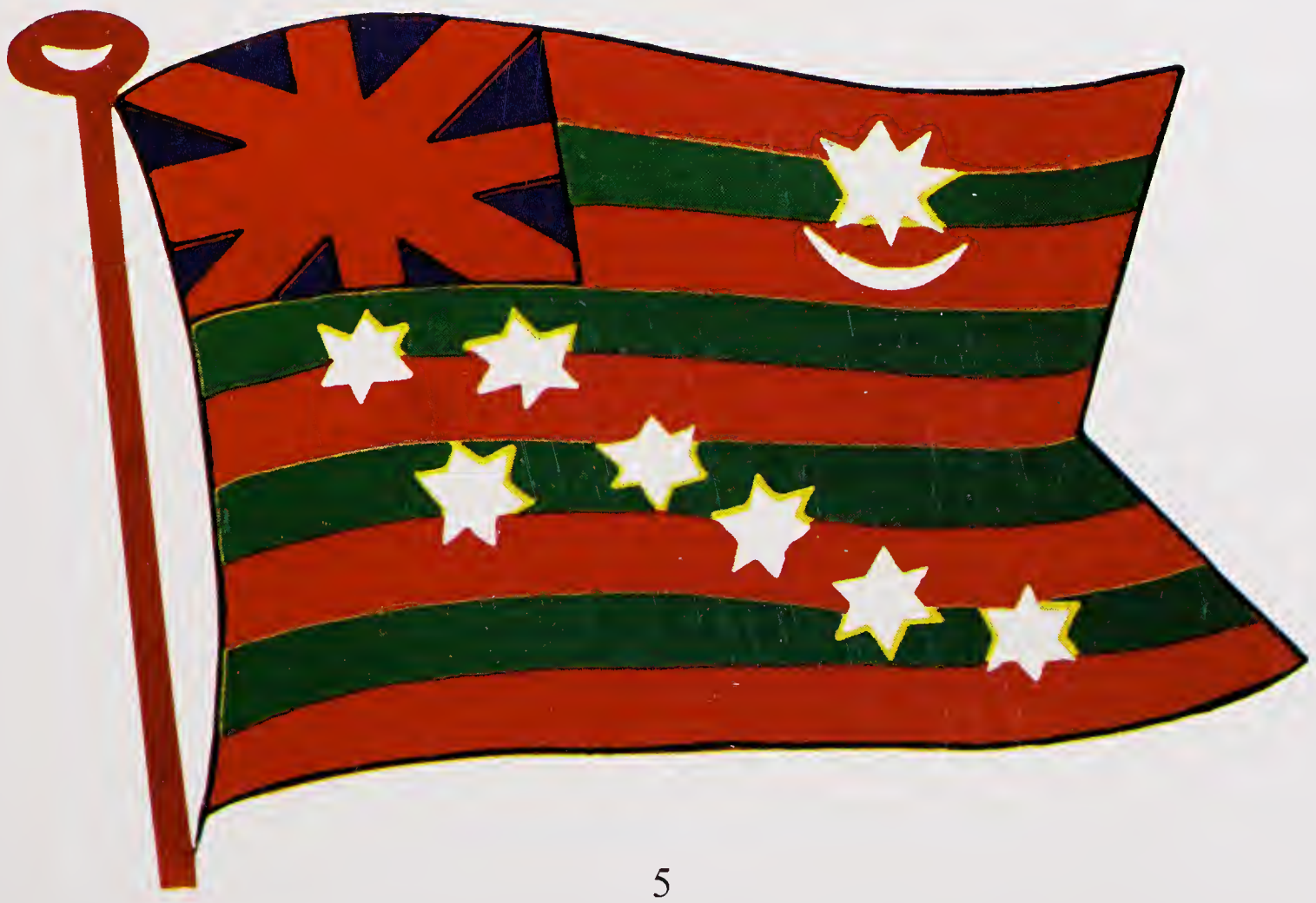

आठ कमल–पुष्पों की परिकल्पना भिन्न थी। निचली लाल पट्टी पर अंकित सूर्य को ध्वज के दायीं ओर तथा अर्धचन्द्र को बायीं ओर अंकित कर दिया गया था। अर्धचन्द्र पर कोई तारा अंकित नहीं था। गुजरात के समाजवादी नेता इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा यह ध्वज भारत में चुपके से लाया गया था।

सन् 1917 में जब गृह शासन आन्दोलन के दौरान लोकमान्य तिलक तथा डा. एनी बेसेण्ट द्वारा तीसरा ध्वज फहराया गया, उसके पहले ही हमारे स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ लिया था। इस ध्वज में पांच लाल तथा चार हरी समस्तर पट्टियां एकान्तर से व्यवस्थित की गई थीं, जिस पर सप्तऋषि की आकृति में सात तारे बने हुए थे। सबसे ऊपरी बायें कोने पर ब्रिटिश ध्वज और ऊपरी दांये कोने पर एक श्वेत अर्धचन्द्र व तारा अंकित था। ब्रिटिश ध्वज को शामिल करना स्वामित्व की स्थिति के ध्येय को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करना था। अतः इसे बड़ी संख्या में लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया।

सन् 1921 में बेज़वाड़ा (वर्तमान विजयवाड़ा) में संपन्न अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक के दौरान आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक ध्वज की परिकल्पना तैयार कर उसे महात्मा गांधी को दिखाया। इसमें दो रंग थे – हरा तथा लाल। प्रगति का परिचायक एक बड़ा–सा चरखा भी अंकित था। गांधीजी ने इसमें एक श्वेत पट्टी जोड़ने का सुझाव दिया। तत्पश्चात् इस ध्वज में तीन रंग हो गए – सफेद, हरा तथा लाल और बीचोंबीच नीले रंग से चरखे की आकृति इस पर अध्यारोपित कर दी गई। इस ध्वज का सन् 1931 तक संपन्न सभी कांग्रेस अधिवेशनों में उपयोग किया गया, हालांकि कांग्रेस के एक आधिकारिक ध्वज के रूप में इसकी स्वीकृति का कोई प्रमाण हमें प्राप्त नहीं होता।

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की सन् 1931 में करांची (अब पाकिस्तान में) में संपन्न बैठक में एक ऐसे ध्वज की आवश्यकता से संबंधित प्रस्ताव पारित किया गया, जो आधिकारिक रूप से कांग्रेस को स्वीकार्य हो। ध्वज में निर्धारित रंगों के साम्प्रदायिक अर्थ प्रतिपादन के कारण पहले ही ध्वज में प्रयुक्त रंगों के महत्व पर पर्याप्त बहस हो चुकी थी।

कांग्रेस द्वारा नियुक्त सात सदस्यों की एक समिति ने सादे केसरी ध्वज का सुझाव प्रस्तुत किया, जिसके ऊपरी बांये कोने पर लालिमा युक्त भूरे रंग से चरखे की आकृति बनी हुई थी। इसे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अस्वीकार कर दिया था।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

हमें याद रखना चाहिए कि वर्ष 1931, ध्वज के विकास के इतिहास की एक युगान्तरकारी घटना थी। इस वर्ष तिरंगे ध्वज का हमारे राष्ट्र ध्वज के रूप में अभिग्रहण किए जाने संबंधी एक प्रस्ताव पारित किया गया। केसरिया, श्वेत तथा हरी पट्टियों से युक्त तिरंगे को स्वीकृत करते हुए प्रस्ताव में स्पष्ट किया गया कि इन रंगों का कोई साम्प्रदायिक महत्त्व नहीं है और इसके अर्थ को निम्न रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए :

केसरिया – हिम्मत और त्याग
श्वेत – सत्य और शान्ति
हरा – विश्वास और शौर्य

इस ध्वज की श्वेत पट्टी पर गहरे नीले रंग में चरखे की एक आकृति अध्यारोपित थी। इस ध्वज का आकार तीन चौड़ाई गुणा दो चौड़ाई था। इस प्रस्ताव को पहली बार राष्ट्र के रूप में कांग्रेस की आधिकारिक स्वीकृति प्रदान की गई।

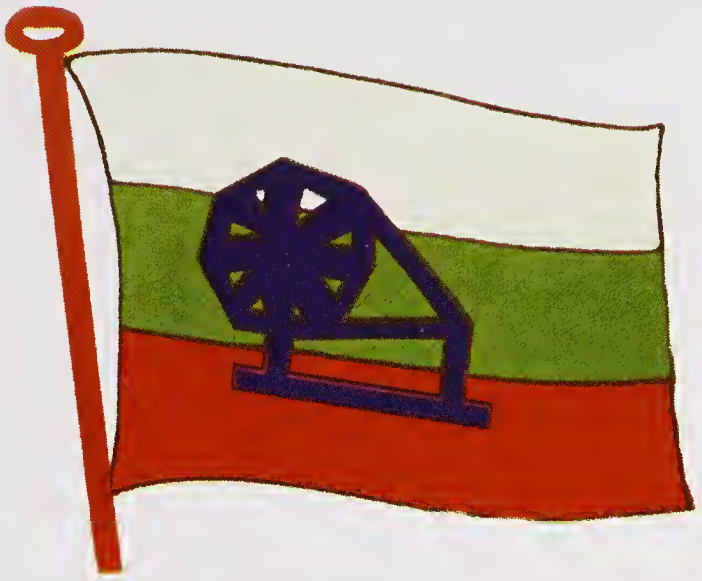

The tricolour approved by Gandhiji, 1921

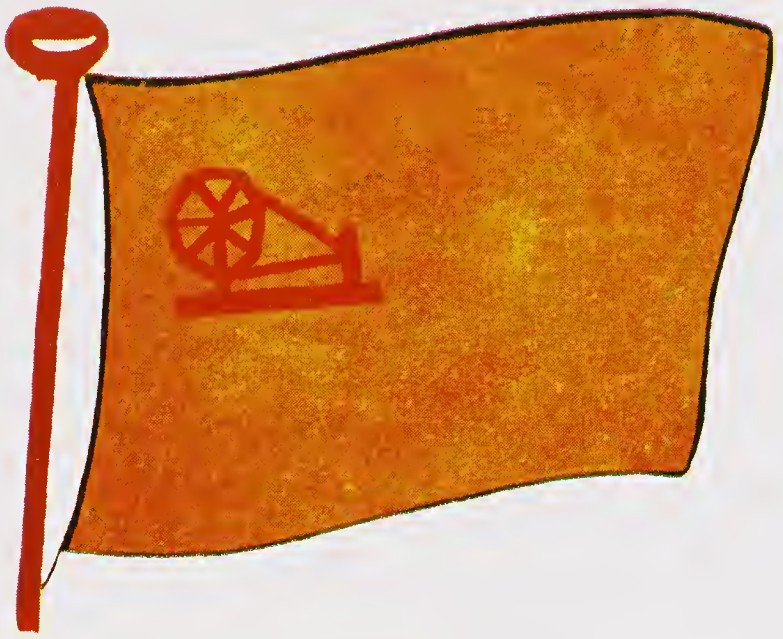

Flag proposed in AICC session in 1931

During the All India Congress Committee (AICC) meeting at Bezwada (now Vijaywada), in 1921, a youth from Andhra Pradesh designed a flag and took it to Mahatma Gandhi. It had two colours - green and red and a large *charkha* (spinning wheel) symbolising progress. Gandhiji suggested the addition of a white stripe. The flag had three colours - white, green and red and a *charkha* superimposed in blue in the centre. This flag was used at all Congress Sessions till 1931 though one does not find any record of acceptance of this as the official Congress Flag.

In 1931, when the All India Congress Committee met at Karachi (now in Pakistan), a resolution was passed stressing the need for a flag which would be officially acceptable to the Congress. There was already considerable controversy over the significance of the colours in the flag mainly due to the communal interpretations of these colours.

A Committee of seven members appointed by the Congress suggested a plain saffron flag with a *charkha* in reddish brown on the top left hand corner. However, it was not accepted by the All India Congress Committee.

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

We should remember that the year 1931 was a landmark in the history of the evolution of the flag. A resolution was passed adopting a tricolour flag as our National Flag. Approving the tricolour with saffron, white and green stripes, the resolution clearly stated that the colours had no communal significance and were to be interpreted thus :

Saffron for courage and sacrifice
White for truth and peace
Green for faith and chivalry

संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1947 ईस्वी को इस ध्वज को स्वतंत्र भारत के राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया। रंग पहले वाले ही रहे तथा ध्वज पर प्रतीक स्वरूप सम्राट अशोक के धर्मचक्र ने चरखे का स्थान ले लिया। यह प्रस्ताव संविधान सभा में पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

"हम कृतसंकल्प हैं कि भारत का राष्ट्र ध्वज समस्तर होगा, जिसमें गहरा केसरी, श्वेत व गहरा हरा रंग समानुपातिक रूप में होगा। श्वेत पट्टी के मध्य में चरखे को प्रस्तुत करने के लिए गहरे नीले रंग में एक चक्र होगा। चक्र की यह परिकल्पना सारनाथ स्थित सम्राट अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ की कंगनी के शीर्ष फलक पर दिखाई देती है। चक्र का व्यास लगभग श्वेत पट्टी की चौड़ाई के बराबर ही होगा। ध्वज की चौड़ाई और लंबाई का अनुपात सामान्यतः 2'x3' होगा।"

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

पंडित नेहरू द्वारा संविधान सभा में प्रस्तुत ध्वजचक्र एक समकोणात्मक फलक था, जो तीन समकोणात्मक पट्टियों अथवा समान चौड़ाई वाली उप – पट्टियों से बना था। सबसे ऊपरी केसरी और नीचे की पट्टी हरे रंग की थी। बीच की पट्टी श्वेत थी, जिसके मध्य में गहरे नीले रंग से अशोक चक्र की परिकल्पना अध्यारोपित थी। ऐसा सुझाव दिया गया था कि सभी परिस्थितियों में चक्र को ध्वज के दोनों ओर स्क्रीन प्रिंटिंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, अन्यथा दोनों ओर चक्र को मुद्रित, स्टेंसिल अथवा कशीदाकारी द्वारा अंकित किया जाना चाहिए। ध्वज के लिए प्रयुक्त किए गए वस्त्र का ही अध्यारोपण हेतु उपयोग किया जाना चाहिए।

It carried a *charkha* in navy blue on the white band. The size was three breadths by two breadths. This resolution for the first time conferred official Congress recognition on the tricolour as the National Flag.

" On July 22, 1947 the Constituent Assembly adopted this as Independent India's National Flag. The colours remained the same, the Dharmachakra of Emperor Ashoka replaced the *charkha* as the emblem on the flag". This resolution was moved by Pandit Jawaharlal Nehru in the Constituent Assembly.

" Resolved that the National Flag of India shall be a horizontal colour of deep saffron (Kesari), white and dark green in equal proportions. In the centre of the white band there shall be a wheel in navy blue to represent the charkha. The design of the wheel (chakra) which appears on the abacus of the Sarnath Lion Capital of Ashoka.

The diameter of the wheel shall be approximate to the width of the white band. The ratio of the width to the length of the flag shall ordinarily be two breadths by three breadths."

Flag adopted by the Constituent Assembly, 1947

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

The flag presented by Pandit Nehru to the Constituent Assembly was a tricolour rectangular panel, made up of three rectangular panels or sub panels of equal width. The colour of the top panel is Indian saffron *(Kesari)* and of the bottom panel Indian green. The middle

" झंडा सभी राष्ट्रो के लिए एक अनिवार्यता है। लाखों इसके लिये मर चुके हैं। निस्संदेह यह एक प्रकार की मूर्तिपूजा है जिसको खण्डित करना एक पाप होगा। क्योंकि, झंडा एक आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है। यूनियन जैक के फहराने से अंग्रेजो के हृदय उन भावों से उद्वेलित हो उठते हैं जिनकी गहराई का अनुमान लगाना कठिन है। अमेरिकनों के लिए तारों और पट्टियों का झंडा अत्यंत व्यापक अर्थो से युक्त है। दूज का चांद और सितारा इस्लाम के श्रेष्ठतम शौर्य की याद दिलाता है।

हम भारतीयों–हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी तथा अन्य सब जिनका घर भारत है – के लिए यह आवश्यक है कि हम एक ही झंडा स्वीकार कर लें और उसी के लिए जियें तथा मरें "

– महात्मा गांधी

panel is white, bearing in the centre the design of Ashoka *chakra* in navy blue. It was suggested that the *chakra* should preferably be screen printed on both sides of the flag, or otherwise printed, stenciled or suitably embroidered on both sides in all cases. The super-imposed cloth must be of the same material as that of the body.

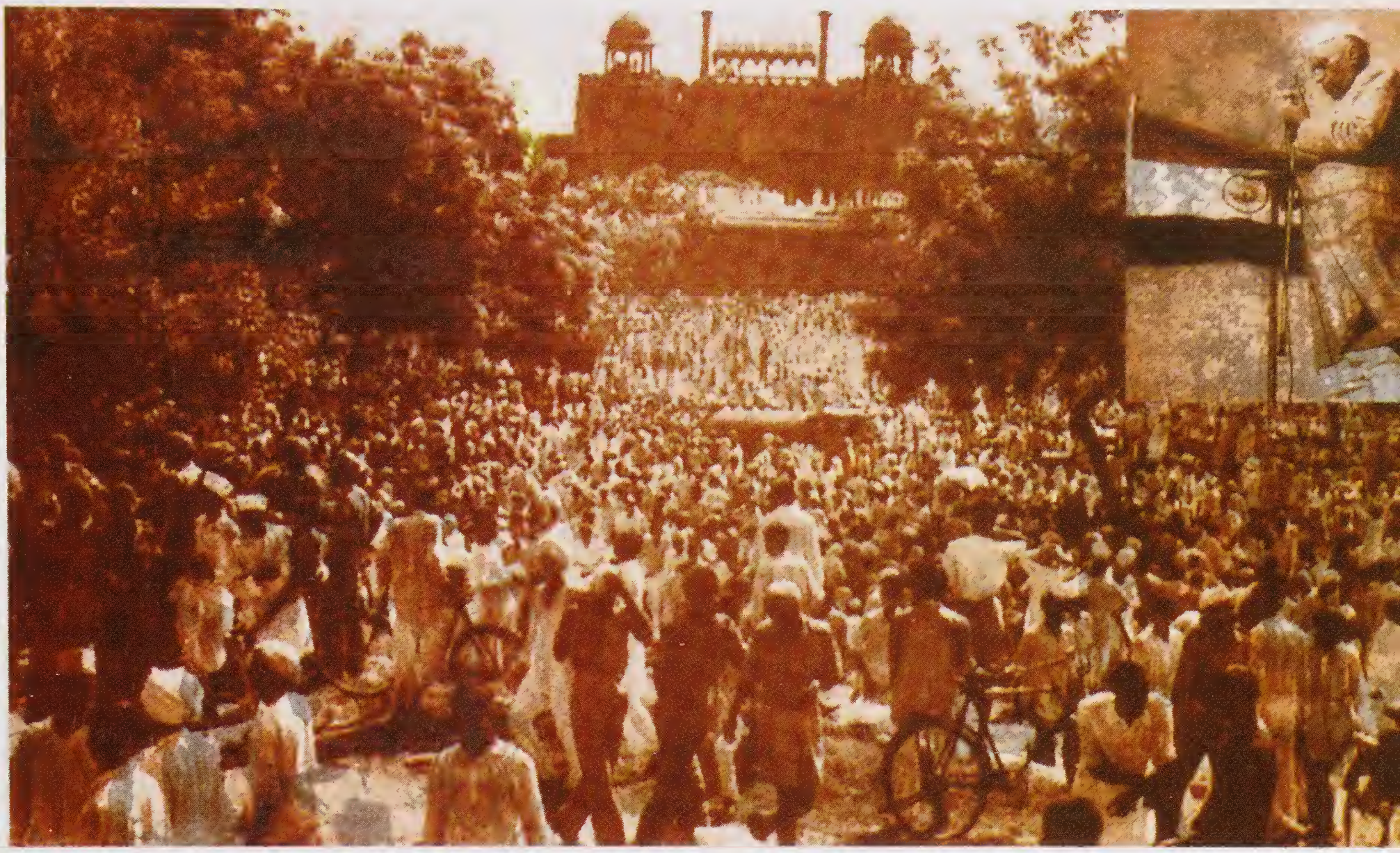

Pandit Jawaharlal Nehru, India's first Prime Minister unfurling the National Flag from the ramparts of historic Red Fort, Delhi on August 16, 1947

" A flag is a necessity for all nations. Millions have died for it. It is no doubt a kind of idolatry which it would be a sin to destroy. For, a flag represents an ideal. The unfurling of the Union Jack evokes in the English breast sentiments whose strength it is difficult to measure. The stars and stripes mean a world to the Americans. The star and the crescent will call forth the best bravery in Islam. "

" It will be necessary for us Indians – Hindus, Muslims, Christians, Jews, Parsis and all others to whom India is their home –to recognize a common flag to live and to die for. "

– Mahatma Gandhi

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ

राष्ट्र ध्वज के विषय में राष्ट्रीय नेताओं की सूक्तियां / विचार एकत्रित कीजिए।

विश्व भर के राजाओं और सरदारों के समान हिन्दू पुराणों के नायक भी अपने व्यक्तिगत प्रतीक चिह्नों के साथ ध्वज लेकर चलते थे। भीम, अर्जुन, कर्ण, टीपू सुल्तान, कुतुब–उद्दीन–ऐबक, अकबर, शिवाजी, झाँसी की रानी – लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप के प्रतीक चिह्नों को ढूंढिए।

राष्ट्र ध्वज के विकास व अभिग्रहण से संबद्ध सभी घटनाओं को सूचीबद्ध करने का प्रयास कीजिए।

भारत के राष्ट्र ध्वज के विकास पर एक प्रदर्शनी आयोजित करिए।

विविध अवसरों पर राष्ट्र ध्वज का प्रयोग किए जाने से संबंधित विविध दिशा–सूचकों तथा संशोधनों को अभिलेखित करने के लिए कतरन पुस्तिका (स्क्रैप बुक) का प्रयोग कीजिए।

भारतीय राष्ट्र ध्वज की कहानी पर आधारित एक नाटक का मंच प्रस्तुतीकरण करने हेतु आलेख तैयार कीजिए।

ध्वज व ध्वज फहराने के लिए भारत की प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों को एकत्रित कीजिए, जैसे हिन्दी में ध्वज और ध्वजारोहण।

विश्व भर में ध्वज पर अंकित शब्दों / संदेशों को उनके संबधित अर्थ सहित एकत्रित कीजिए।
उदाहरण के लिए, भारतीय वायुसेना के ध्वज पर अंकित नारा है – नभ स्पर्श दीप्तम्।

राष्ट्र ध्वज की प्रशंसा में एक गीत लिखिए।

अन्य देशों के राष्ट्र ध्वजों के चित्र एकत्रित कर उनके रंगों तथा डिज़ाइनों के प्रतीकार्थ का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

Collect various quotes/views of national leaders about the National Flag.

Heroes in Hindu mythology or Indian history carried flags with their personal emblems in battle, just like kings and chieftains the world over. Identify the emblems of Bhishma, Arjun, Karna, Tipu Sultan, Qutub-ud-din Aibak, Akbar, Shivaji, Rani Lakshmibai of Jhansi, Maharana Pratap etc.

List all the incidents associated with the development and adoption of the National Flag.

Design and display an exhibition on the development of story of our National Flag.

Use a scrap book for recording the various directives and amendments made from time to time on the use of National Flag on various occasions.

Develop a script to stage a drama on the story of the Indian National Flag.

Collect words used in regional languages for Flag and Flag hoisting such as *dhvaj* and *dhvajarohan* in Hindi.

Collect words/messages with respective meanings written on Flags all over the world. For example, the motto of Indian Air Force is *Nabh Sparsh Deeptam*, which is written on their flag.

Write a song in praise of the National Flag.

Collect pictures of National Flags of other countries and write a brief description of the symbolic meaning of their colours and designs.

About CCRT

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organizes a variety of training programmes for administrators, teacher educators, in service teachers of all levels and students. These aim at sensitizing the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The digital slide-album of performing arts, natural environment and plastic/visual arts containing images alongwith descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The films on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

Since 1982, the CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children in the age group of 10-14 years to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has been awarded for implementation the Scheme namely "Award of Scholarships to Young Artistes in different Cultural fields", under which 400 scholarships are provided in the age group 18-25 years in the field of Indian Classical Music, Classical Dances, Light Classical Music, Theatre, Visual Arts and Folk, Traditional and Indigenous Arts.

The CCRT has also been awarded for implementation the Fellowship Scheme namely "Award of Fellowship to outstanding persons in the Field of Culture", under which 200 Junior and Senior Fellows each are selected every year. The focus is on "in-depth study/research" in various facets of culture. These include New Emerging Areas of Cultural Studies.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

For further details you may visit our website: www.ccrtindia.gov.in

References

Agrawal, V.S., (1964), "The Wheel Flag of India (Chakra-Dhvaja), Varanasi.

Chatterji, Suniti Kumar, (1944), "The National Flag : A Selection of Papers, Cultural and Historical," Kolkata.

Constituent Assembly of India-Debates, (July 22, 1947).

Khare, M.D., "Tradition of Chakra Triratna, Symbols of Ancient Seals", Journal of Indian History, Vol. 42'.

Mookerji, Radhakumud, "Our National Insignia", The Illustrated Weekly of India, (January 26, 1969).

Publications Division, (1963), "Our Flag.

The National Flag Code.

Young India, (April 13, 1929), reproduced in the Harijan, August 3, 1947.

Photo Credits

Press Information Bureau, New Delhi.

"India's Struggle for Independence". NCERT (1986).

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2017
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training, 2017

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at India Offset Press, Delhi-110064